भारतीय संस्कृति–विविधता में एकता

'संस्कृति' शब्द का सामान्य अर्थ है–मानव जीवन के दैनिक आचार-व्यवहार, रहन-सहन, क्रिया-कलाप आदि। वास्तव में संस्कृति का निर्माण एक लंबी परंपरा के बाद होता है। संस्कृति विचार और आचरण के वे नियम और मूल्य हैं, जिन्हें कोई समाज अपने अतीत से प्राप्त करता है। इसलिए कहा जा सकता है कि संस्कृति को हम अपने अतीत से विरासत के रूप में प्राप्त करते हैं। दूसरे शब्दों में कहें, तो संस्कृति एक विशिष्ट जीवन-शैली का नाम है। यह एक सामाजिक विरासत है, जो परंपरा से चली आ रही होती है।

प्रायः सभ्यता और संस्कृति को एक ही मान लिया जाता है, परंतु दोनों में अंतर है। इस अंतर को समझना आवश्यक है। सभ्यता में मनुष्य-जीवन के भौतिक पक्ष की प्रधानता होती है। सभ्यता का अनुमान भौतिक सुख-सुविधाओं से लगाया जा सकता है। इसके विपरीत संस्कृति में आचार-विचार की प्रधानता रहती है। हम सभ्यता को शरीर मान सकते हैं और संस्कृति को आत्मा। इन दोनों को अलग-अलग करके नहीं देखा जा सकता है। वास्तव में ये दोनों एक-दूसरे की पूरक हैं। इनका विकास भी साथ-साथ होता है। अंतर केवल इतना है कि सभ्यता समय के साथ बदलती रहती है, किंतु संस्कृति शाश्वत है, वह नहीं बदलती है। भारतीय संस्कृति प्राचीनकाल से ही अपना निश्चित स्वरूप ग्रहण कर चुकी है। यह कब और कैसे विकसित हुई है, इसका निश्चित आधार उपलब्ध नहीं है। प्राचीन ग्रंथों के आधार पर इसकी प्राचीनता का अनुमान लगाया जा सकता है। भारतीय संस्कृति को समझने के लिए इसे हम तीन भागों में बाँट सकते हैं–(1) वैदिक काल, (2) मध्यकाल, (3) आधुनिक काल।

1. वैदिक काल

भारतीय संस्कृति के विकास का परिचय हमें वेदों से मिलता है। वेद चार हैं–ऋग्वेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद तथा सामवेद। अनुमान है कि वेद ईसा से कई हज़ार वर्ष पूर्व लिखे गए थे। बाद में इनकी व्याख्या करने के लिए वेदांग, उपनिषद आदि की रचना की गई। उस समय समाज चार वर्णों और चार आश्रमों में बँटा हुआ था। चार वर्ण थे–ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। इन वर्णों के विभाजन का आधार कर्म था, जन्म नहीं। इसी प्रकार चार आश्रम थे–ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास। ऐसे समय में भगवान महावीर और महात्मा बुद्ध का प्रादुर्भाव हुआ। उन्होंने सामाजिक बुराइयों को दूर करने के प्रयास किए और मानव-धर्म को स्थापित कर भारतीय संस्कृति को आगे बढ़ाया।

चंद्रगुप्त मौर्य से लेकर हर्षवर्धन तक का काल हमारे देश के इतिहास का सर्वोत्तम काल माना जाता है। इस काल के शासकों ने धर्म, दर्शन, साहित्य, संगीत और कलाओं के विकास में विशेष रुचि ली। इसमें भारतीय संस्कृति विकसित हुई। आगे चलकर 'गुप्तकाल' में महान साहित्य रचा गया। महाकवि कालिदास इसी युग में हुए। भारतीय तथा यूनानी कलाओं के मेल से कला की नवीन शैलियों ने जन्म लिया। संगीत के क्षेत्र में भी गायन-नृत्य की अनेक शैलियाँ विकसित हुईं।

2. मध्य काल

इस काल में राजनीति, धर्म, दर्शन, समाज, साहित्य आदि क्षेत्रों में बहुआयामी विकास हुआ। इस्लाम धर्म के आ जाने से एक नई संस्कृति ने जन्म लिया। तब समाज अनेक जातियों और उपजातियों में बँटा हुआ था। समाज में भी अनेक बुराइयाँ पनपने लगी थीं। बौद्ध और जैन धर्म भी अनेक शाखाओं में बँट चुका था। इन विषम परिस्थितियों में दक्षिण में आड्यार तथा आलवार भक्तों ने भक्ति आंदोलन चलाया। रामानुजाचार्य, मध्वाचार्य तथा वल्लभाचार्य ने उत्तर भारत में भक्ति की लहर चलाई। अब भक्ति धारा भी दो भागों में बँट गई थी—सगुण भक्ति और निर्गुण भक्ति। सगुण भक्ति का विकास करने में तुलसीदास तथा सूरदास ने अपना योगदान दिया। निर्गुण भक्ति को कबीर ने आगे बढ़ाया। इन कवियों ने अपनी रचनाओं से भारतीय संस्कृति को समृद्ध किया। इसमें सूफी कवियों का भी योगदान रहा। भक्ति का यह आंदोलन धीरे-धीरे पूरे भारत में फैल गया। पंजाब में गुरु नानक, राजस्थान में मीराबाई, महाराष्ट्र में संत ज्ञानेश्वर आदि ने भारतीय संस्कृति को अपनी वाणी से सींचा।

3. आधुनिक काल

भारतीय संस्कृति के इस काल-खंड का आरंभ 18वीं शताब्दी से माना जाता है। इस समय मुगल साम्राज्य समाप्ति पर था और अँग्रेज़ों का प्रभाव बढ़ता जा रहा था। अँग्रेज़ों ने शासन को सुचारु रूप से चलाने के लिए अँग्रेज़ी शिक्षा को बढ़ावा दिया। यह काल भारत के इतिहास में 'पुनर्जागरण काल' के नाम से जाना जाता है। इस काल में अनेक समाज-सुधारक हुए, जिन्होंने समाज से अंधविश्वासों और बुराइयों को दूर करने का प्रयत्न किया। आर्य समाज, थियोसोफिकल सोसायटी आदि संगठन इसी शृंखला की कड़ियाँ हैं। इसी समय भारतीय संस्कृति के मूल्यों को पुनः स्थापित करने में स्वामी विवेकानंद की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण रही। उन्होंने विदेशों में भी भारतीय संस्कृति का प्रचार-प्रसार किया। आगे चलकर महात्मा गाँधी ने सत्य और अहिंसा को भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग बताया।

भारतीय संविधान में लोकतंत्र, समाजवाद और धर्मनिरपेक्षता के सिद्धांतों को स्वीकार किया गया है जबकि भारतीय संस्कृति की एक लंबी ऐतिहासिक परंपरा आज भी निरंतर विकास के पथ पर अग्रसर

है। मिश्र, यूनान, रोम आदि देशों की संस्कृतियाँ आज केवल इतिहास बनकर रह गई हैं। उनकी अच्छी बातों को ग्रहण करके नए रंग-रूप में ढाला गया है। इसे हम 'सामासिक संस्कृति' भी कह सकते हैं। इस विकास की प्रक्रिया में 'सामासिक संस्कृति' ने अन्य संस्कृतियों को अपने में समेटा है।

भारतीय संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता है–'अनेकता में एकता।' इसमें ऊपरी तौर पर विभिन्नताएँ भले ही दिखाई देती हों, पर आंतरिक रूप से इसमें एकता की भावना समाई हुई है। लचीलापन, ग्रहणशीलता तथा सामाजिक स्वरूप इसकी प्रमुख विशेषताएँ हैं। इन विशेषताओं में आध्यात्मिकता और भौतिकता का मिश्रण रहा है। अतः इसकी प्राचीनता एवं गतिशीलता के कारण ही भारतीय संस्कृति विश्व में अपना विशिष्ट स्थान रखती है। हमें भारतीय संस्कृति की महानता पर गर्व है।